डॉ॰ संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज, आरा

विभिन्न भाषा परिवार :→ यूरेशिया खण्ड

1) भारोपीय परिवार :- विश्व का सबसे बड़ा भाषा परिवार है। संसार के प्रत्येक भाग में इस परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। भारत से यूरोप पर्यन्त प्रयुक्त होने के कारण इसका नाम भारोपीय परिवार रखा गया है। भारोपीय परिवार की प्राचीन भाषाओं में - संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश प्राचीन फ्रांसीसी, जर्मन, हिन्दी, मराठी, गुजराती, पंजाबी तथा बंगला आदि प्रमुख आधुनिक भाषाएँ इसी परिवार की हैं।

भारोपीय भाषाओं को ध्वनि विषयक साम्य-वैषम्य के आधार पर भारोपीय परिवार को दो वर्गों में बाँटा गया है। फीनलैंड के इन दोनों वर्गों का नामकरण सतम् तथा कैण्टुम वर्ग कहा है। प्रतिनिधि भाषा के रूप में लैटिन तथा अवेस्ता को आधार बनाकर सौ के वाचक शब्दों के द्वारा समझाया गया है। जो कि भारोपीय भाषा में प्रयुक्त होता है।

सतम वर्ग	कैण्टुम वर्ग
अवेस्ता - सतम्	लैटिन - कैन्टुम
फारसी - सद	ग्रीक - अस्तोम
संस्कृत - शतम्	इटैलियन - केण्टो
हिन्दी - सौ	फ्रेंच - केन्त
रूसी - स्तो	केल्टी - कैन्ट
बुल्गेरियन - सुतौ	गाबेलिक - कुड
लिथुआनियन - श्जिमास	~~लिथुआनि~~ तोखारी - कन्धा
प्राकृत - सँ	गाथिक - खुँद

2) द्राविड़ परिवार → यह परिवार दक्षिण भारत में नर्मदा गोदावरी से कुमारी अन्तरीप तक फैला हुआ है। इसको तमिल परिवार भी कहते हैं। इस परिवार की भाषाएँ अश्लिष्ट-अन्त्ययोगात्मक है। इस परिवार की प्रमुख भाषाएँ है —

तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम, गोंडी, उरांव, ब्राहुई, तुलु कोडगु, टोडा, कोटा, माल्टो, कुई या कंधी, कोलामी।

3) बुरुशास्की या खजुना परिवार :- इस परिवार का क्षेत्र भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग है। कुछ विद्वान इस मुण्डा / द्राविड़ परिवार से सम्बद्ध मानते हैं। इसका क्षेत्र भारत-ईरानी, तुर्की और तिब्बती परिवार से घिरा है। इस भाषा में सर्वनाम प्रधान होता है।

4) यूराल-अल्ताई परिवार → यह भाषा परिवार उत्तर में उत्तरी महासागर से लेकर दक्षिण में भूमध्य सागर तक, पश्चिम में अटलांटिक महासागर से रूस में ओखोटस्क सागर तक एवं हंगरी टर्की, फिनलैंड आदि सभी आते हैं। कुछ विद्वान इसे यूराल वर्ग एवं अल्ताई वर्ग में विभक्त मानते हैं। यूराल में 'फिनी' 'लापी' 'एस्तोनी' 'मग्यार' तथा 'समोयद' तथा अल्ताई वर्ग में 'तुर्की' 'उजबेक', 'मंगोली' तथा मंचुई आदि भाषाएँ आती हैं।

5) काकेशी परिवार :- इसका क्षेत्र कृष्ण सागर तथा कैस्पियन सागर के मध्य स्थित काकेशस पर्वत के समीपस्थ भू-भाग है। सरकसी, चेचेन, लेगी, ज्यार्सी, मिंगली, स्वानी आदि इस परिवार की भाषाएँ हैं। कारकों एवं लिंगो की अधिकता है, ये अश्लिष्ट योगात्मक है। अवर आदि बोलियों में 30 कारक तथा चेचेनिश आदि में 6 लिंग हैं।

6) चीनी या एकाक्षरी भाषा परिवार :- विभक्ति, प्रत्यय आदि के द्वारा पद रचना न होने से इसे एकाक्षर परिवार कहते हैं। इसकी सभी भाषाएँ अयोगात्मक हैं।

एकाक्षर शब्दों की संख्या लगभग एक हजार है। इस परिवार की भाषाओं में कोई व्याकरण नहीं है। यह सुर एवं निपात प्रधान भाषा है। इसका क्षेत्र -चीन, वर्मा, स्याम, तिब्बत है।

7) जापानी कोरियाई परिवार → यह जापान एवं कोरिया में बोली जाती है। यह अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ हैं।

8) अत्युत्तरी (हाईपर बोरी) परिवार ⇒ इसका नामकरण भौगोलिक आधार पर रखा गया है। इसके उपनाम पुरा एशियाई या पैलियो - एशियाटिक भी है। इसका क्षेत्र साइबेरिया का उत्तर-पूर्वी प्रदेश में फैला हुआ है। इस परिवार की प्रमुख भाषाएँ - युकागिर, कमचटका, चुकची है तथा अइनू है।

9) बास्क परिवार → यह भाषा परिवार पेनटीज पर्वत के पश्चिमी भाग के फ्रांस एवं स्पेन के सीमा प्रदेशों में बोला जाता है। इस परिवार की भाषाएँ प्रधानतः अश्लिष्ट योगात्मक है। इसमें प्रमुखतः आठ बोलियाँ बोली जाती है।

10) सामी - हामी परिवार :→ कुछ विद्वान इसको दो परिवारों का संयुक्त रूप मानते हैं। तथा एक ही परिवार की दो शाखाएँ। बाइबिल के कथानक के अनुसार हजरत नौह के दो पुत्रों सेम तथा हैम के नाम पर सैमेटिक एवं हैमिटिक पड़ा था। इस परिवार की सामी एशिया में अरब, इराक, फिलिस्तीन, सीरिया तथा अफ्रीका में मिस्र, इथियोपिया, तुनिसिया, अल्जीरिया एवं मोरक्को आदि है। हामी अफ्रीका में लीबिया, सोमालीलैण्ड एवं इथियोपिया है। ये दोनों भाषाएँ श्लिष्ट-योगात्मक एवं अन्तर्मुखी हैं। इनकी प्रमुख भाषाएँ अक्कारियन, कनानित, अरमाइक, अरबी तथा एबीसीनियन, लीबियन, मैरोइटिक, इथियोपिक (कुशीत) मिस्री आदि हैं।

—x—